Under CSR Support by ipca | Foundation

Under CSR Su ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

# ARJUN BATCH

## 11th HISTORY

## बदलती हुई सांस्कृतिक परंपराएं

## अभ्यास प्रश्न

CHAPTER 05 • PART -08

27 अगस्त 2026 || 03:00 PM

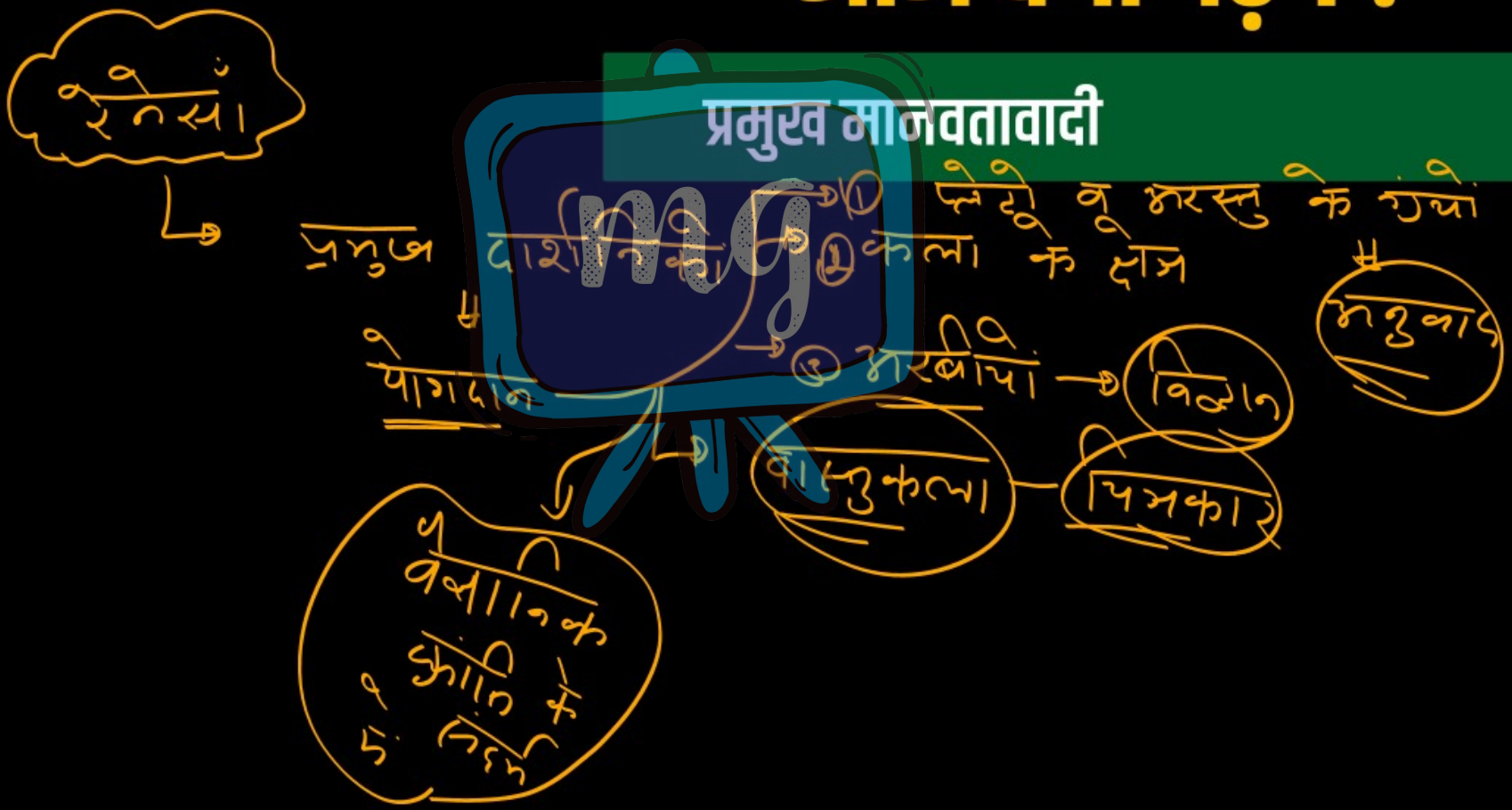


Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

# आज क्या पढ़ेंगे ?

## प्रमुख मानवतावादी



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



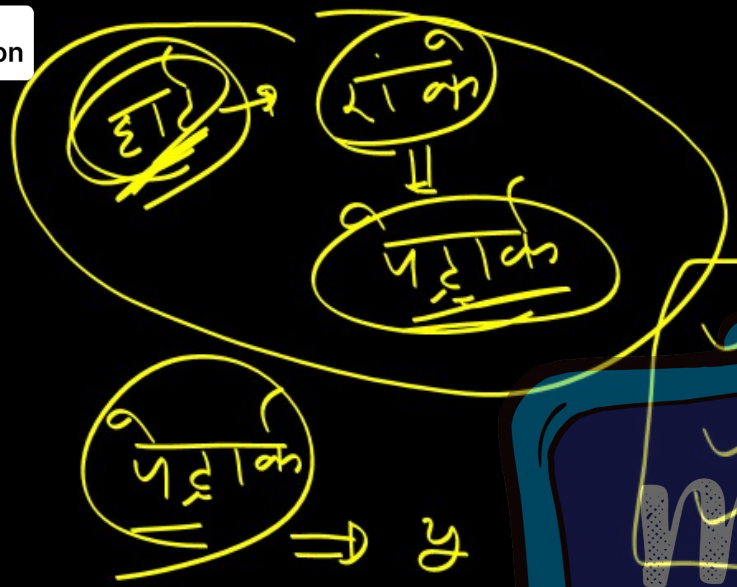



- रेनेसाँ'/पुनर्जागरण शब्द का प्रयोग किया।
- जैकब बर्कहार्ट (1818–1897) → बेसल विश्वविद्यालय के इतिहासकार।
- उनके गुरु → लियोपोल्ड वॉन रांके।
- रांके का जोर → राज्य और राजनीति के इतिहास पर।
- प्रमुख पुस्तक

1860 — द सिविलाइजेशन ऑफ द रेनेसाँ इन इटली।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



इसमें बर्कहार्ट ने:

साहित्य,

वास्तुकला,

चित्रकला,

❖ मानवतावादी संस्कृति पर जोर दिया।

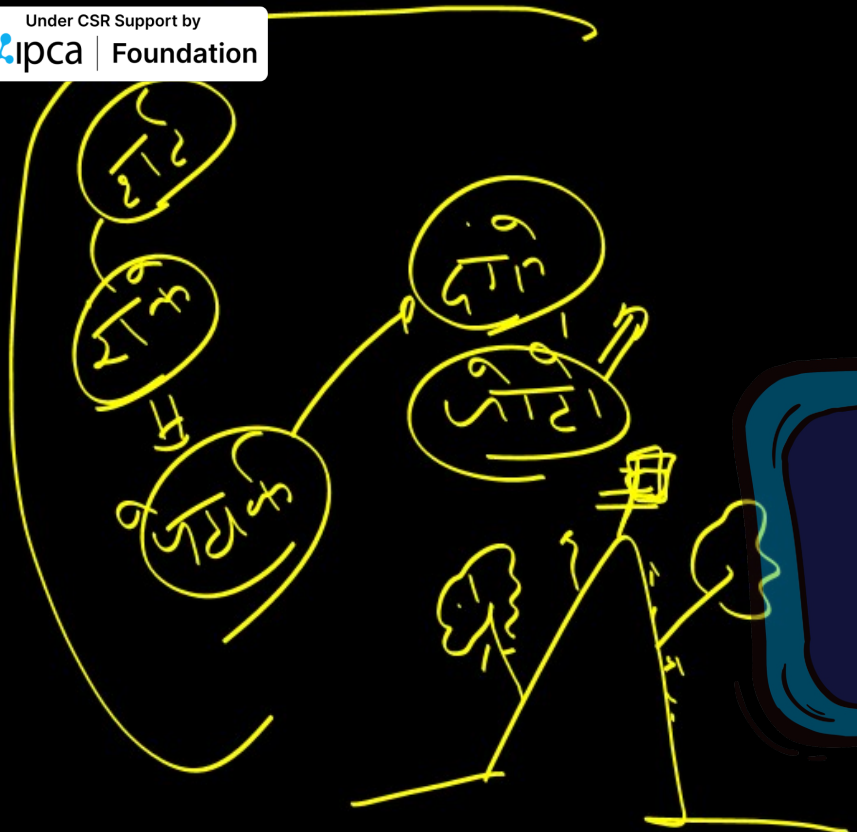
फ्रांसेस्को पेट्रार्क

पेट्रार्क (1304–1378) ने प्राचीन यूनानी-रोमन सभ्यता के अध्ययन पर जोर दिया।

उनके अनुसार:

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER




प्राचीन सभ्यता को समझने के लिए प्राचीन लेखकों की मूल रचनाओं का गहन अध्ययन आवश्यक था।

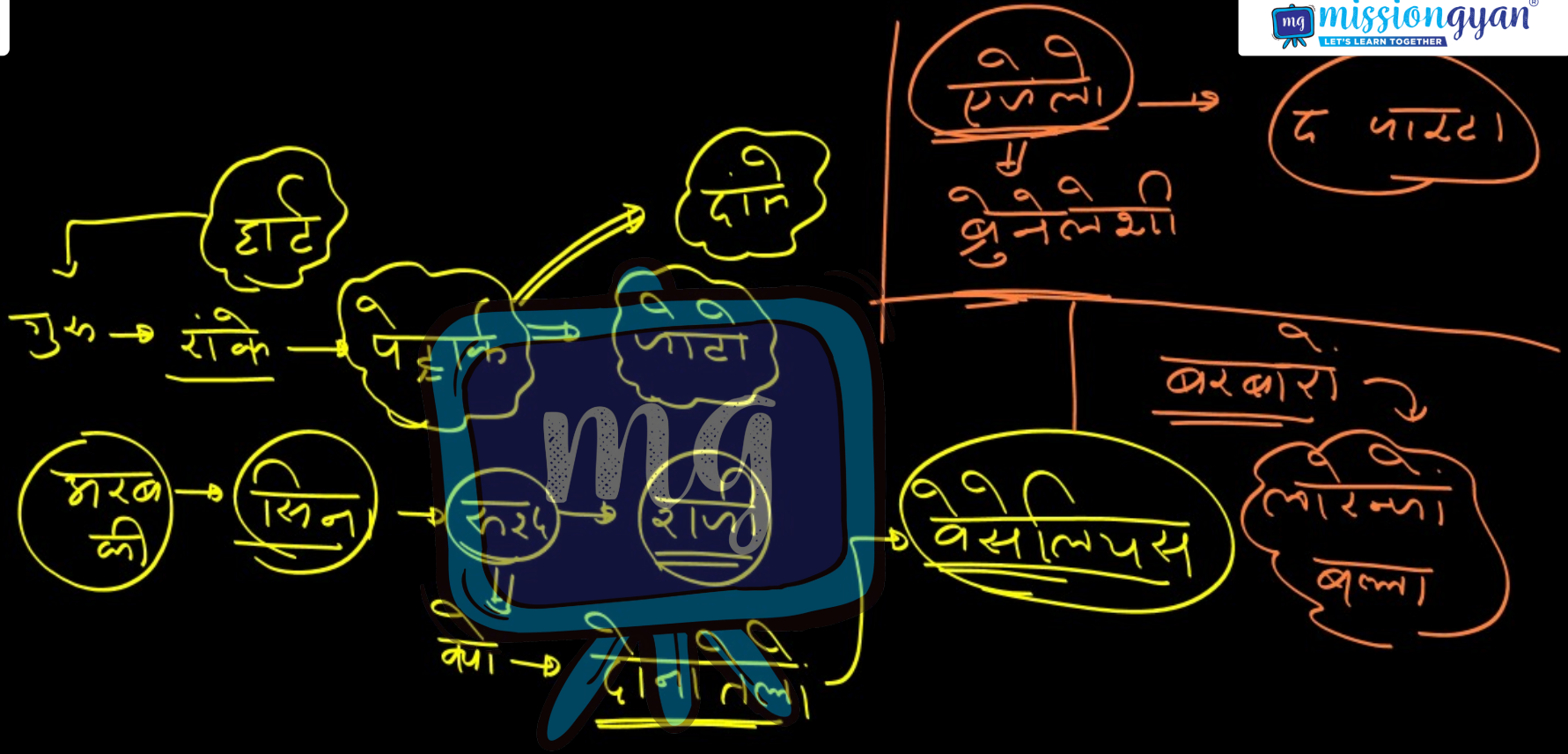
- 15वीं शताब्दी में फ्लोरेंस प्रमुख बौद्धिक एवं कलात्मक केंद्र बना।

प्रसिद्धि बढ़ाने वाले प्रमुख व्यक्तित्व:

- दांते अलिगहियरी — साहित्यकार।
- जोटो — जीवंत रूपचित्र बनाने वाले कलाकार।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

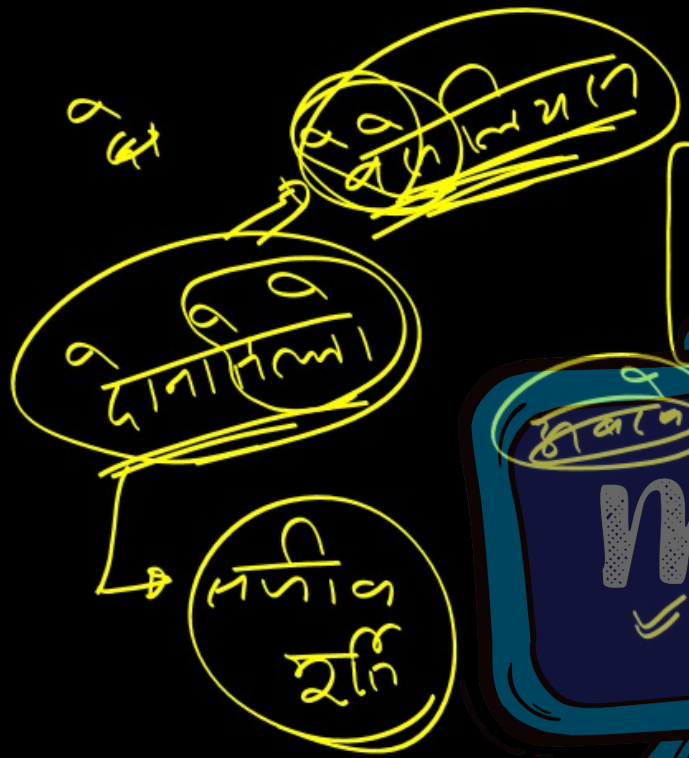
## ❖ विज्ञान और दर्शन में अरबों का योगदान

प्रमुख विद्वान

1. इब्न-सिना
   - बुखारा के दार्शनिक।
   - लातिनी नाम → एविसिना।
2. अल-राजी
   - आयुर्विज्ञान विश्वकोश के लेखक।
3. इब्न रुश्द
   - स्पेन के अरबी दार्शनिक।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



दार्शनिक ज्ञान और धार्मिक विश्वासों के तनाव को सुलझाने का प्रयास।

उनकी पद्धति को ईसाई चिंतकों ने भी अपनाया।

- कलाकार और यथार्थवाद

दोनातेल्लो ने सजीव मूर्तियों की नई परंपरा विकसित की।

आन्द्रेआस वेसेलियस

पादुआ विश्वविद्यालय में आयुर्विज्ञान के प्राध्यापक।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मानव शरीर की चीर-फाड़ द्वारा सूक्ष्म जाँच की। इससे आधुनिक शरीर-क्रिया विज्ञान के विकास को बल मिला।

लियोनार्डो दा विंची और कला-विज्ञान संबंध

लियोनार्डो दा विंची

रुचियाँ:

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



वनस्पति विज्ञान

शरीर रचना विज्ञान

गणित

कला

- प्रमुख चित्र:

मोना लीसा

द लास्ट सपर

पक्षियों की उड़ान का अध्ययन किया।

उड़न-मशीन का प्रतिरूप बनाया।

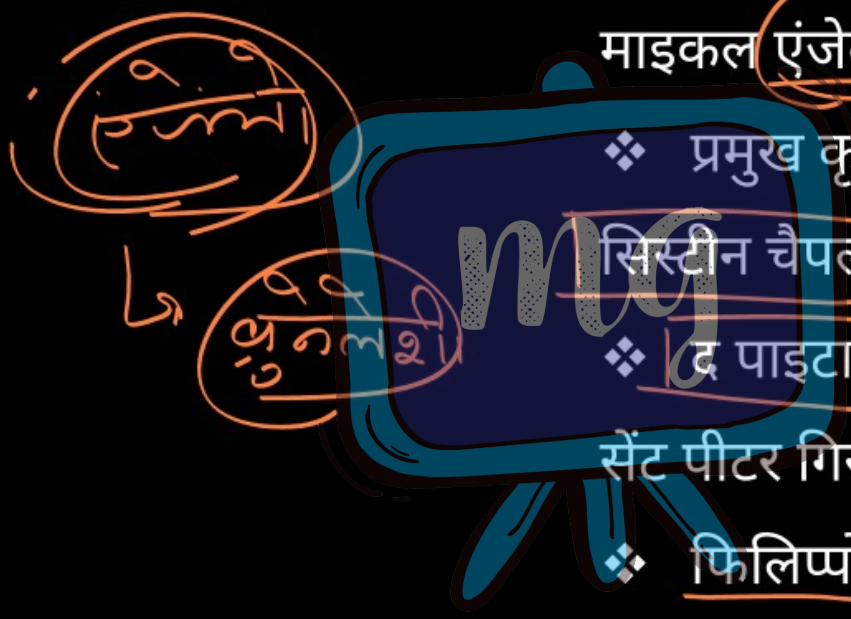
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- पुनर्जागरणकालीन वास्तुकला

माइकल एंजेलो

- प्रमुख कृतियाँ:

सिस्टीन चैपल की छत पर चित्र।

- द पाइटा प्रतिमा।

सेंट पीटर गिरजे के गुंबद का डिजाइन।

- फिलिप्पो ब्रुनेलेशी

फ्लोरेंस के ड्यूमो का परिरूप।

प्रारंभ में मूर्तिकार थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- मुद्रण तकनीक

गुटेनबर्ग

जोहानेस गुटेनबर्ग ने पहला छापाखाना बनाया।

- मनुष्य की नई संकल्पना

प्रमुख विचारक

फ्रेंचेस्को बरबारो

संपत्ति अर्जन को विशेष गुण माना।

लोरेन्जो वल्ला

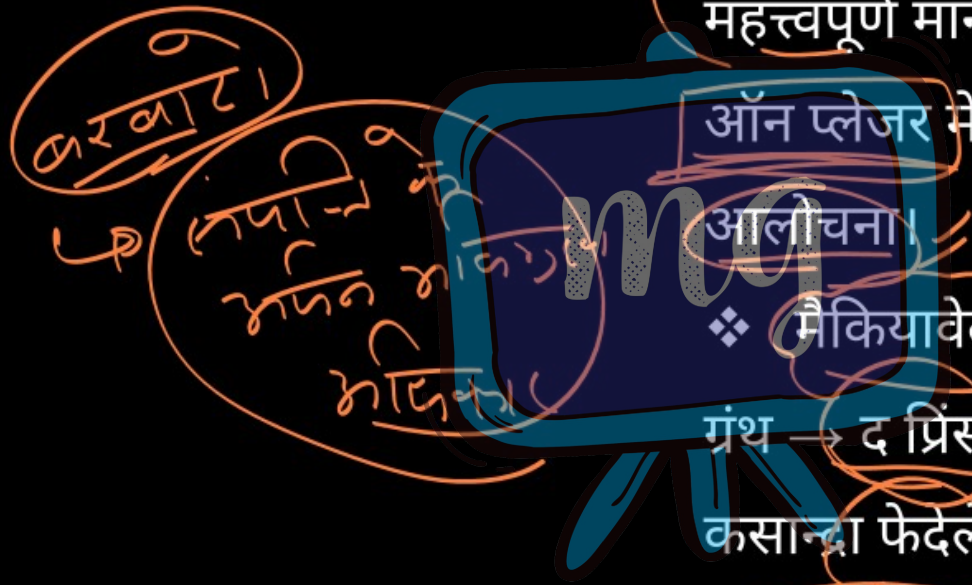
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

mg missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



इतिहास के अध्ययन को पूर्ण जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण माना।

ऑन प्लेजर में भोग-विलास पर ईसाई निषेध की आलोचना।

- मैकियावेली का मानव-स्वभाव संबंधी विचार

ग्रंथ → द प्रिंस (1513)।

कसान्द्रा फेदेले

कसान्द्रा फेदेले (1465–1558)।

महिलाओं की शिक्षा की समर्थक।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

यूनानी एवं लातिनी की विद्वान।

इसाबेला दि एस्ते

मंटुआ की मार्चिसा।

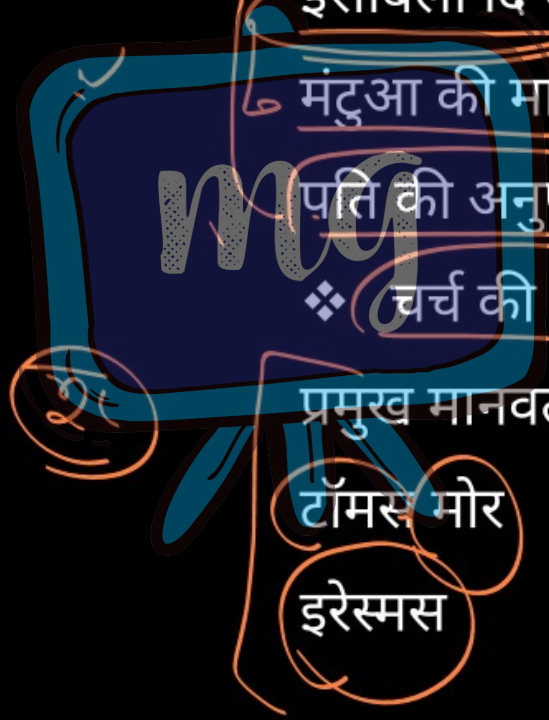
पति की अनुपस्थिति में राज्य का शासन किया।

- चर्च की आलोचना

प्रमुख मानवतावादी:

टॉमस मोर

इरेस्मस



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- प्रोटेस्टेंट सुधार आंदोलन
- मार्टिन लूथर
  - 1517 → कैथोलिक चर्च के विरुद्ध अभियान।
- प्रमुख विचार:
  - ईश्वर से संपर्क के लिए पादरी आवश्यक नहीं।
  - ईश्वर में पूर्ण विश्वास महत्त्वपूर्ण।
- आंदोलन → प्रोटेस्टेंट सुधारवाद।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

विस्तार

जर्मनी और स्विट्जरलैंड में चर्चों ने पोप से संबंध तोड़े।

स्विट्जरलैंड:

- उलरिक ज्विंगली
- जॉं कैल्विन
- एनाबैप्टिस्ट

अधिक उग्र सुधारक।

सभी मनुष्यों को समान मानते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

करों का विरोध।

लोगों को अपना पादरी चुनने का अधिकार देने की माँग।

सामंतवाद से पीड़ित किसानों को आकर्षित किया।

धार्मिक सुधार के आगे के प्रभाव

विलियम टिंडेल

बाइबल का अंग्रेजी में अनुवाद।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सामान्य लोगों के लिए धर्मग्रंथों का मातृभाषा में उपलब्ध होना आवश्यक माना।

❖ कोपरनिकस

कोपरनिकस (1473–1543)।

❖ सिद्धांत:

पृथ्वी सहित सभी ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं।

अपनी खोज पर चर्च की प्रतिक्रिया के भय से पांडुलिपि प्रकाशित नहीं कराना चाहते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पांडुलिपि → द रिवोल्यूशनिबस।

मृत्यु के समय इसे जोशिम रेटिकस को सौंपा।

- केप्लर, गैलिलियो और न्यूटन
- जोहानेस केप्लर

कोपरनिकस के सूर्य-केंद्रित सिद्धांत को लोकप्रिय बनाया।

ग्रह सूर्य के चारों ओर दीर्घवृत्ताकार मार्ग पर घूमते हैं।

ग्रंथ → कॉस्मोग्राफिकल मिस्ट्री।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- गैलिलियो

गतिशील विश्व के सिद्धांत की पुष्टि।

ग्रंथ → द मोशन।

- न्यूटन

वैज्ञानिक क्रांति → गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत के साथ चरम पर पहुँची।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

# यूरोप में नगरीय-संस्कृति का विकास



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

# यूरोप में नगरीय-संस्कृति का विकास



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

# यूरोप में नगरीय-संस्कृति का विकास



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- चौदहवीं शताब्दी से सत्रहवीं शताब्दी के अंत तक यूरोप में 'नगरीय संस्कृति' विकसित हो रही थी।
- फ्लोरेंस, वेनिस और रोम-कला और विद्या के केंद्र बन गए।
- नगरों को राजाओं और चर्च से थोड़ी बहुत स्वायत्तता मिली थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- मुद्रण के आविष्कार से लोगों को छपी हुई पुस्तकें उपलब्ध होने लगी।
- यूरोप में इतिहास की समझ विकसित होने लगी।
- लोग अपने 'आधुनिक विश्व' की तुलना यूनानी व रोमन 'प्राचीन दुनिया' से करने लगे थे।
- चर्च के, पृथ्वी के केंद्र संबंधी विश्वासों को वैज्ञानिकों ने गलत सिद्ध कर दिया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इस विचार के पीछे यह मान्यता थी कि यूरोप विश्व का केंद्र है ।
- उन्नीसवीं शताब्दी के इतिहासकारों ने 'रेनेसाँ' शब्द का प्रयोग किया।
- यह उस काल के सांस्कृतिक परिवर्तनों को बताता है।
- 1860 ई. में बर्कहार्ट ने 'दि सिविलाईजेशन ऑफ दि रेनेसाँ इन इटली' नामक पुस्तक की रचना की।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इसमें उन्होंने पाठकों का ध्यान साहित्य, वास्तुकला और चित्रकला की ओर आकर्षित किया ।
- उन्होंने यह बताया कि चौदहवीं शताब्दी से सत्रहवीं शताब्दी तक इटली के नगरों में किस प्रकार एक 'मानवतावादी' संस्कृति पनप रही थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यह संस्कृति इस नए विश्वास पर आधारित थी कि व्यक्ति अपने बारे में खुद निर्णय लेने और अपनी दक्षता को आगे बढ़ाने में समर्थ है।
- ऐसा व्यक्ति 'आधुनिक' था जबकि 'मध्यकालीन मानव' पर चर्च का नियंत्रण था।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# इटली के नगरों का पुनरुत्थान

- पश्चिम रोम साम्राज्य के पतन के बाद इटली के राजनैतिक और सांस्कृतिक केन्द्रों का विनाश हो गया।
- इसी समय पूर्वी यूरोप बाइजेंटाइन साम्राज्य के शासन में बदल रहा था।
- उधर कुछ और पश्चिम में इस्लाम एक सांझी सभ्यता का निर्माण कर रहा था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

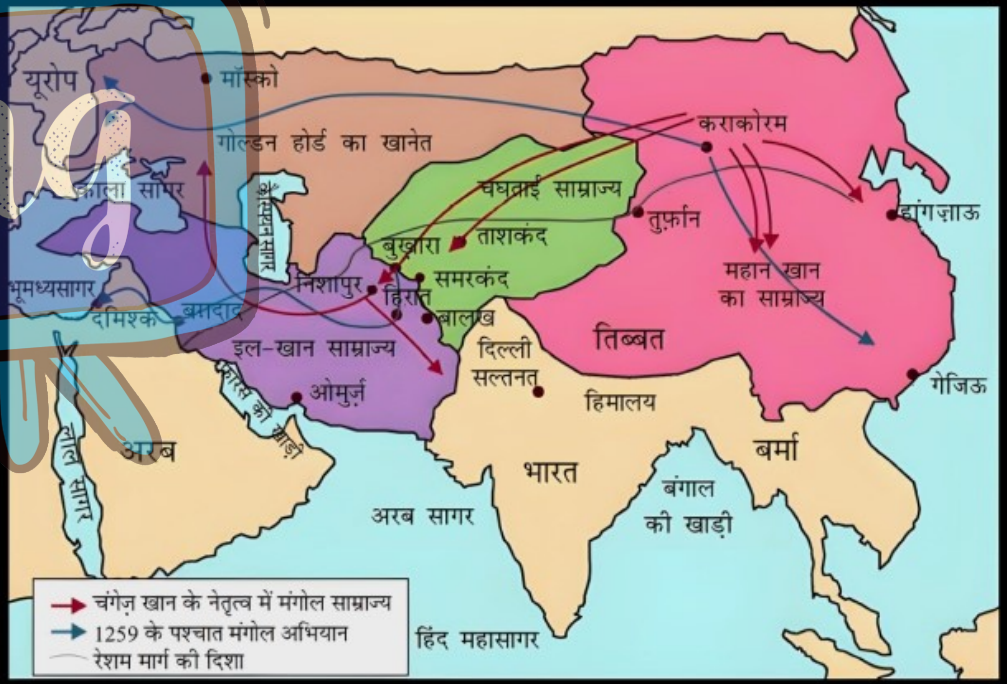
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इटली एक कमज़ोर देश था और अनेक टुकड़ों में बँटा हुआ था।
- इन्हीं परिवर्तनों ने इतालवी संस्कृति के पुनरुत्थान में सहायता प्रदान की।
- बाइजेंटाइन साम्राज्य और इस्लामी देशों के बीच व्यापार बढ़ा ।
- इससे इटली के तटवर्ती बंदरगाह पुनर्जीवित हो गए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- बारहवीं शताब्दी से मंगोलों ने चीन के साथ 'रेशम मार्ग' से व्यापार आरंभ किया।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- पश्चिमी यूरोपीय देशों के व्यापार को बढ़ावा मिला।
- इसमें इटली के नगरों ने मुख्य भूमिका निभाई।
- अब वे अपने को एक स्वतंत्र नगर-राज्यों का एक समूह मानते थे।
- नगरों में फ़्लोरेंस और वेनिस, गणराज्य थे ।
- सर्वाधिक जीवंत शहरों में पहला वेनिस और दूसरा जिनेवा था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यहाँ धर्माधिकारी और सामंत वर्ग राजनैतिक दृष्टि से शक्तिशाली नहीं थे।
- नगर के धनी व्यापारी और महाजन नगर के शासन में सक्रिय रूप से भाग लेते थे।
- इससे नागरिकता की भावना पनपने लगी।
- कार्डिनल गेसपारो कोन्तारिनी अपने ग्रंथ 'दि कॉमनवेल्थ एण्ड गवर्नमेंट ऑफ वेनिस (1534)' में अपने नगर-राज्य की लोकतांत्रिक सरकार के बारे में लिखते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

# विश्वविद्यालय और मानवतावाद

- यूरोप में सबसे पहले विश्वविद्यालय इटली के शहरों में स्थापित हुए।
- ग्यारहवीं शताब्दी से पादुआ और बोलोनिया विश्वविद्यालय विधिशास्त्र के अध्ययन केंद्र रहे।
- इन नगरों के प्रमुख क्रियाकलाप व्यापार और वाणिज्य संबंधी थे।
- इसलिए वकीलों और नोटरी की बहुत अधिक आवश्यकता होती थी ।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- क्योंकि वे नियमों को लिखते, उनकी व्याख्या करते और समझौते तैयार करते थे।
- इनके बिना बड़े पैमाने पर व्यापार करना संभव नहीं था।
- यही कारण था कि कानून का अध्ययन एक प्रिय विषय बन गया।
- कानून को रोमन संस्कृति के संदर्भ में पढ़ा जाने लगा।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- फ़्रांचेस्को पेट्रार्क इस परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- पेट्रार्क के लिए पुराकाल एक विशिष्ट सभ्यता थी।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- जिसे प्राचीन यूनानियों और रोमनों के वास्तविक शब्दों के माध्यम से ही अच्छी तरह समझा जा सकता है।
- इस शिक्षा कार्यक्रम में यह अंतर्निहित था कि बहुत कुछ जानना बाकी है।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यह सब हम केवल धार्मिक शिक्षण से नहीं सीखते।
- इसी नयी संस्कृति को उन्नीसवीं शताब्दी के इतिहासकारों ने 'मानवतावाद' नाम दिया।
- लातिनी शब्द 'ह्यूमेनिटास' से 'ह्यूमेनिटिज़' शब्द बना है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इसे रोम के वकील तथा निबंधकार सिसरो ने, 'संस्कृति' के अर्थ में लिया था।
- सिसरो जूलियस सीजर का समकालीन था।



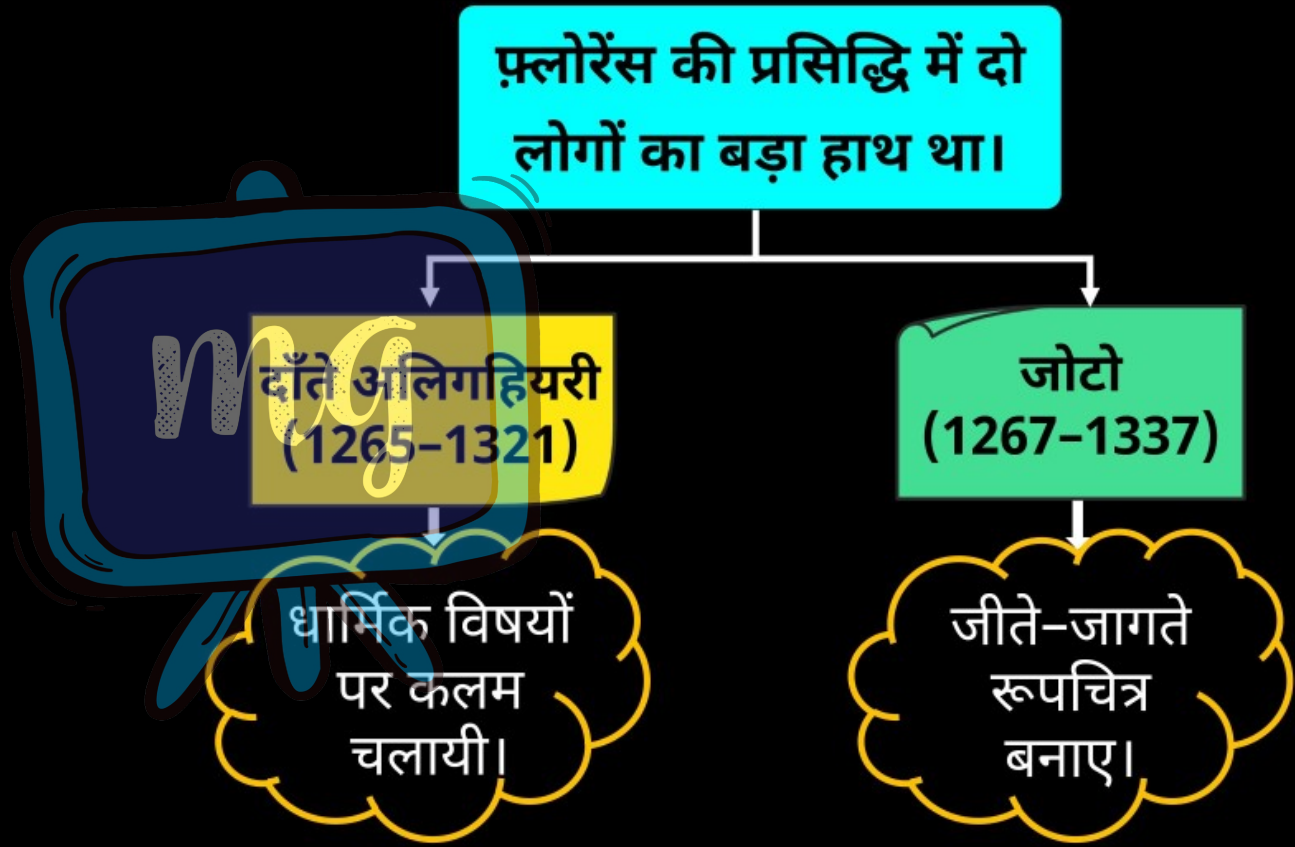
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इन क्रांतिकारी विचारों ने अनेक विश्वविद्यालयों का ध्यान आकर्षित किया।
- इनमें एक विश्वविद्यालय फ़्लोरेंस भी था जो पेट्रार्क का स्थायी नगर-निवास था।
- फ़्लोरेंस के मानवतावादी जोवान्ने पिको देल्ला मिरांदोला (1463-94) ने 'ऑन दि डिगनिटी ऑफ मैन (1486)' नामक पुस्तक लिखी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 'रेनेसाँ व्यक्ति' शब्द का प्रयोग प्रायः उस मनुष्य के लिए किया जाता है जिसकी अनेक रुचियाँ हों और अनेक हुनर में उसे महारत प्राप्त हो।
- पुनर्जागरण काल में एक ही व्यक्ति विद्वान, कूटनीतिज्ञ, धर्मशास्त्रज्ञ और कलाकार हो सकता था।

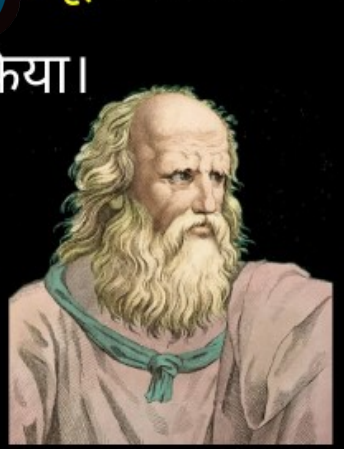
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

# यूरोप में विज्ञान, दर्शन और कला का विकास

## विज्ञान और दर्शन-अरबीयों का योगदान

- चौदहवीं शताब्दी में अनेक विद्वानों ने प्लेटो और अरस्तू के ग्रंथों के अनुवादों को पढ़ना शुरू किया।





Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- अरबी भाषा में प्लेटो, अफलातून और एरिसटोटिल, अरस्तू नाम से जाने जाते थे।
- इसके लिए वे अरब के अनुवादकों के ऋणी थे।
- उन्होंने अतीत की पांडुलिपियों का अनुवाद किया था।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- ये ग्रंथ प्राकृतिक विज्ञान, गणित, खगोल विज्ञान, औषधि विज्ञान और रसायन विज्ञान से संबंधित थे।
- टॉलेमी का अलमजेस्ट ग्रंथ खगोल शास्त्र पर रचित है।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- मुसलमान लेखकों में अरबी के हकीम और मध्य एशिया के बुखारा के दार्शनिक इब्न-सिना और आयुर्विज्ञान विश्वकोश के लेखक अल-राजी सम्मिलित थे।
- स्पेन के अरबी दर्शानिक इब्न रूश्द (1126-98) ने दार्शनिक ज्ञान (फैलसुफ़) और धार्मिक विश्वासों के बीच रहे तनावों को सुलझाने की चेष्टा की।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- उनकी पद्धति को ईसाई चिंतकों द्वारा अपनाया गया।
- मानवतावादी अपनी बात लोगों तक तरह-तरह से पहुँचाने लगे।
- मानवतावादी विषय धीरे-धीरे स्कूलों में पढ़ाया जाने लगा।
- यह सिर्फ इटली में ही नहीं बल्कि यूरोप के अन्य देशों में भी हुआ।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# कलाकार और यथार्थवाद

- कला, वास्तुकला और ग्रंथों ने मानवतावादी विचारों को फैलाने में प्रभावी भूमिका निभाई।
- प्राचीन रोम और उसके उजाड़ नगरों के खंडहरों में अनेक कलात्मक वस्तुएँ मिलीं।
- 1416 में दोनातल्लो (1386-1466) ने सजीव मूर्तियाँ बनाकर नयी परंपरा कायम की।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कलाकारों द्वारा हूबहू मूल आकृति जैसी मूर्तियों को बनाने की चाह को वैज्ञानिकों के कार्यों से सहायता मिली।
- नर कंकालों का अध्ययन करने के लिए कलाकर आयुर्विज्ञान कॉलेजों की प्रयोगशालाओं में गए।
- बेल्जियम मूल के आन्ड्रीयस वेसेलियस (1514-64) पादुआ विश्वविद्यालय में आयुर्विज्ञान के प्राध्यापक थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- ये पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सूक्ष्म परीक्षण के लिए मनुष्य के शरीर की चीर-फाड़ की।
- इसी समय से आधुनिक शरीर-क्रिया विज्ञान का प्रारंभ हुआ।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- 'दि पाइटा' चित्र में माइकेल एन्जिलो ने मेरी को ईसा के शरीर को धारण करते हुए दिखाया है।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- लियोनार्डो दा विन्ची (1452-1519) ने मोना लीसा और द लास्ट सपर चित्रों की रचना की।
- उन्होंने एक उड़न-मशीन का प्रतिरूप बनाया।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER





Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उन्होंने अपना नाम 'लियोनार्डो दा विन्ची, 'परीक्षण का अनुयायी' रखा।
- चित्रकारों ने मूर्तिकारों की तरह यथार्थ चित्र बनाने की कोशिश की।
- उन्हें अब रेखागणित और त्रि-आयामी का ज्ञान हो चूका था।
- लेप चित्र के लिए तेल के प्रयोग ने चित्रों को अधिक रंगीन और चटख बनाया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- शरीर विज्ञान, रेखागणित, भौतिकी और सौंदर्य की उत्कृष्ट भावना ने इतालवी कला को नया रूप दिया
- इसे बाद में 'यथार्थवाद' कहा गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# वास्तुकला

- पंद्रहवीं शताब्दी में रोम नगर भव्य रूप से पुनर्जीवित हो उठा।
- पुरातत्त्वविदों द्वारा रोम के अवशेषों का सावधानी से उत्खनन किया गया।
- इसने वास्तुकला की एक 'नयी शैली' को प्रोत्साहित किया।
- जो वास्तव में रोम साम्राज्य कालीन शैली का पुनरूद्धार थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- जिसे अब 'शास्त्रीय शैली' कहा गया।
- शास्त्रीय वास्तुकला से परिचित वास्तुविदों को पोप, धनी व्यापारियों और अभिजात वर्ग के लोगों ने नियुक्त किया।
- इस काल में कुछ ऐसे भी लोग हुए जो कुशल चित्रकार, मूर्तिकार और वास्तुकार, सभी कुछ थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- माईकल ऐंजेलो बुआनारोत्ती (1475-1564) ने पोप के सिस्टीन चैपल की भीतरी छत में लेपचित्र, 'दि पाइटा' नामक प्रतिमा, और सेंट पीटर गिरजे के गुम्बद का डिजाइन बनाया।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- वास्तुकार फिलिप्पो ब्रूनेलेशी (1337-1446) ने फ़्लोरेंस के भव्य गुम्बद का परिरूप प्रस्तुत किया था।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- सन् 1455 में जर्मन मूल के जोहानेस गूटेनबर्ग (1400-58) ने पहले छापेखाने का निर्माण किया।
- उनकी कार्यशाला में बाईबल की 150 प्रतियाँ छपीं।
- इससे लोगों में पढ़ने की आदत का विकास हुआ।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

| चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दियाँ | |
|---|---|
| 1300 | इटली के पादुआ विश्वविद्यालय में मानवतावाद पढ़ाया जाने लगा |
| 1341 | पेट्रार्क को रोम में 'राजकवि' की उपाधि से सम्मानित किया गया |
| 1349 | फ्लोरेंस में विश्वविद्यालय की स्थापना |
| 1390 | जेफ्री चॉसर की 'केन्टरबरी टेल्स' का प्रकाशन |
| 1436 | ब्रुनेलेशी ने फ्लोरेंस में ड्यूमा का परिरूप तैयार किया |
| 1453 | कुंस्तुनतुनिया के बाइजेंटाइन शासक को ऑटोमन तुर्कों ने पराजित किया |

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

| चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दियाँ | |
|---|---|
| 1454 | गुटेनबर्ग ने विभाज्य टाइप से बाईबल का प्रकाशन किया |
| 1484 | पुर्तगाली गणितज्ञों ने सूर्य का अध्ययन कर अक्षांश की गणना की |
| 1492 | कोलम्बस अमरीका पहुँचे |
| 1495 | लियोनाडों द विंची ने 'द लास्ट सपर' (अंतिमभोज) चित्र बनाया |
| 1512 | माइकल एन्जिलो ने सिस्टीन चैपल की छत पर चित्र बनाए |

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# इतिहास का मानवतावादी दृष्टिकोण

- मानवतावादी मानते थे कि वह अंधकार के बाद सभ्यता के सही रूप को पुनः स्थापित कर रहे हैं।
- यह मान्यता थी कि रोमन साम्राज्य के टूटने के बाद 'अंधकार युग' शुरू हुआ।
- यूरोप में चौदहवीं शताब्दी के बाद 'नये युग' का जन्म हुआ।
- तर्क थे कि 'मध्ययुग' में चर्च ने लोगों की सोच को जकड़ रखा था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- मानवतावादियों ने 'आधुनिक' शब्द का प्रयोग पंद्रहवीं शताब्दी से शुरू होने वाले काल के लिए किया।

| मानवतावादियों और बाद के विद्वानों द्वारा प्रयुक्त कालक्रम | |
|---|---|
| 5-14 शताब्दी | मध्य युग |
| 5-9 शताब्दी | अंधकार युग |
| 9-11 शताब्दी | आरंभिक मध्य युग |
| 11-14 शताब्दी | उत्तर मध्य युग |
| 15 शताब्दी से | आधुनिक युग |

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# मनुष्य की एक नयी संकल्पना

- मानवतावादी संस्कृति की विशेषताओं में से एक था मानव जीवन पर धर्म का नियंत्रण कमजोर होना।
- इटली के निवासी भौतिक संपत्ति, शक्ति और गौरव से बहुत ज्यादा आकृष्ट थे।
- परंतु ये जरूरी नहीं कि वे अधार्मिक थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- वेनिस के मानवतावादी फ्रेन्चेस्को बरबारो (1390-1454) ने संपत्ति अधिग्रहण करने को एक विशेष गुण बताया।
- लोरेन्ज़ो वल्ला (1406-1457) के अनुसार इतिहास का अध्ययन मुनष्य को पूर्णतया जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित करता है।
- उन्होंने अपनी पुस्तक ऑनप्लेजर में भोग-विलास पर लगाई गई ईसाई धर्म की निषेधाज्ञा की आलोचना की।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इस समय लोगों में अच्छे व्यवहारों के प्रति दिलचस्पी थी जैसे –

- व्यक्ति को किस तरह विनम्रता से बोलना चाहिए।
- कैसे कपड़े पहनने चाहिए।
- एक सभ्य व्यक्ति को किसमें दक्षता हासिल करनी चाहिए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- निकोलो मैक्यिावेली अपने ग्रंथ दि प्रिंस (1513) में मनुष्य के स्वभाव के बारे में लिखते हैं।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# महिलाओं की आकांक्षाएँ

- वैयक्तिकता और नागरिकता के नए विचारों से महिलाओं को दूर रखा गया।
- सार्वजनिक जीवन में अभिजात व संपन्न परिवार के पुरुषों का प्रभुत्व था।
- उस समय लोग अपने लड़कों को ही शिक्षा देते थे।
- विवाह में प्राप्त महिलाओं के दहेज को वे अपने पारिवारिक कारोबारों में लगा देते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- महिलाओं को यह अधिकार नहीं था कि वे अपने पति को कारोबार चलाने के बारे में कोई राय दें।
- पर्याप्त दहेज का प्रबंध न हो होने पर शादीशुदा लड़कियों को ईसाई मठों में भिक्षुणी का जीवन बिताने के लिए भेज दिया जाता था।
- व्यापारी परिवारों में महिलाओं की स्थिति कुछ भिन्न थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- दुकानदारों की स्त्रियाँ दुकानों को चलाने में प्रायः उनकी सहायता करती थीं।
- व्यापारी और साहूकार परिवारों की पत्नियाँ, परिवार के कारोबार को पति की अनुपस्थिति में सँभालती थीं।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- वेनिस निवासी कसान्द्रा फेदेले (1465-1558) ने लिखा, "यद्यपि महिलाओं को शिक्षा न तो पुरस्कार देती है न किसी सम्मान का आश्वासन, तथापि प्रत्येक महिला को सभी प्रकार की शिक्षा को प्राप्त करने की इच्छा रखनी चाहिए और उसे ग्रहण करना चाहिए।"

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- फेदेले ने गणतंत्र की आलोचना "स्वतंत्रता की एक बहुत सीमित परिभाषा निर्धारित करने के लिए की, जो महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों की इच्छा का ज्यादा समर्थन करती थी।"
- इस काल की एक अन्य प्रतिभाशाली महिला मंटुआ की मार्चिसा ईसाबेला दि इस्ते (1474-1539) थीं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

# ईसाई धर्म के अंतर्गत वाद-विवाद

- नयी संस्कृति की शिक्षित और समृद्धिशाली लोगों द्वारा प्रशंसा की गई।
- परंतु इन नए विचारों में कुछ ही आम आदमी तक पहुँच सके क्योंकि वे साक्षर नहीं थे।
- उत्तरी यूरोप में मानवतावाद ने ईसाई चर्च के अनेक सदस्यों को आकर्षित किया।
- उन्होंने अनावश्यक कर्मकांडों को त्यागने की बात की।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

# प्रमुख ईसाई मानवतावादी

## इंग्लैंड के टॉमस मोर (1478-1535)



## हालैंड के इरेस्मस, (1466-1536)



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- चर्च साधारण लोगों से लूट-खसोट करने वाली संस्था बन गई।
- पादरियों का लोगों से धन ठगने का सबसे सरल तरीका 'पाप-स्वीकारोक्ति' (indulgences) नामक दस्तावेज़ था।
- जो व्यक्ति को उसके सारे किए गए पापों से छुटकारा दिला सकता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- किसानों ने चर्च द्वारा लगाए गए इस प्रकार के अनेक करों का विरोध किया।
- 1517 में एक जर्मन युवा भिक्षु मार्टिन लूथर (1483-1546) ने कैथलिक चर्च के विरुद्ध अभियान छेड़ा।
- उसने कहा कि मनुष्य को ईश्वर से संपर्क साधने के लिए पादरी की आवश्यकता नहीं है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इस आंदोलन को प्रोटैस्टेंट सुधारवाद नाम दिया गया।
- न्यू टेस्टामेंट बाईबल का वह खंड है जिसमें ईसा मसीह का जीवन-चरित्र, धर्मोपदेश और प्रारंभिक अनुयायियों का उल्लेख है।
- 1506 में अंग्रेजी भाषा में बाईबल का अनुवाद, लूथरवादी अंग्रेज, विलियम टिंडेल ने किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- स्विटजरलैंड में लूथर के विचारों को उलरिक ज्विंगली (1484-1531) और उसके बाद जौं कैल्विन (1509-64) ने लोकप्रिय बनाया।
- जर्मन सुधारक एनाबेपटिस्ट सम्प्रदाय के नेता इनसे कहीं अधिक उग्र सुधारक थे।
- लूथर ने आमूल परिवर्तनवाद का समर्थन नहीं किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इंग्लैंड के शासकों ने पोप से अपने संबंध तोड़ दिए।
- कैथलिक चर्च ने अनेक आंतरिक सुधार करने प्रारंभ कर दिए।
- स्पेन और इटली में पादरियों ने सादा जीवन और निर्धनों की सेवा पर जोर दिया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- स्पेन में, प्रोटैस्टेंट लोगों से संघर्ष करने के लिए इग्नेशियस लोयोला ने 1540 में 'सोसाइटी ऑफ जीसस' नामक संस्था की स्थापना की।
- उनके अनुयायी जेसुइट कहलाते थे।
- उनका ध्येय निर्धनों की सेवा करना और दूसरी संस्कृतियों के बारे में अपने ज्ञान को ज्यादा व्यापक बनाना था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# कोपरनिकसीय क्रांति

- ईसाइयों का यह विश्वास था कि पृथ्वी पापों से भरी हुई है।
- पृथ्वी, ब्रह्मांड के बीच में स्थिर है जिसके चारों और खगोलीय गृह घूम रहे है
- कोपरनिकस ने घोषणा की कि पृथ्वी समेत सारे ग्रह सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कोपरनिकस इस बात से भयभीत थे कि उनकी इस नयी खोज से परंपरावादी ईसाई धर्माधिकारियों में घोर-प्रतिक्रिया उत्पन्न हो सकती है।
- वह अपनी पाण्डुलिपि दि रिवल्यूशनिबस (परिभ्रमण) को प्रकाशित नहीं कराना चाहते थे।
- उन्होंने यह पाण्डुलिपि अपने अनुयायी जोशिम रिटिकस को सौंप दी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कैप्लर ने अपने ग्रंथ कॉस्मोग्राफ़िकल मिस्ट्री (खगोलीय रहस्य) में कोपरनिकस के सूर्य-केंद्रित सौरमंडलीय सिद्धांत को लोकप्रिय बनाया।
- जिससे यह सिद्ध हुआ कि सारे ग्रह सूर्य के चारों ओर वृत्ताकार रूप में नहीं बल्कि दीर्घ वृत्ताकार मार्ग पर परिक्रमा करते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- गैलिलियो ने अपने ग्रंथ दि मोशन (गति) में गतिशील विश्व के सिद्धांतों की पुष्टि की।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

# ब्रह्मांड का अध्ययन

- अब भौतिकी, रसायन शास्त्र और जीव विज्ञान के क्षेत्र में अनेक प्रयोग और अन्वेषण कार्य होने लगे।
- इतिहासकारों ने मनुष्य और प्रकृति के ज्ञान के इस नए दृष्टिकोण को वैज्ञानिक क्रांति का नाम दिया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 1670 में बनी पेरिस अकादमी और 1662 में लंदन में गठित रॉयल सोसाइटी ने लोगों की जानकारी के लिए व्याख्यानों का आयोजन किया।
- सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए प्रयोग करवाए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

# चौदहवीं सदी में क्या यूरोप में 'पुनर्जागरण' हुआ था?

- इंग्लैंड के पीटर बर्क ने बर्कहार्ट के विचार को अतिशयोक्तिपूर्ण माना है।
- पुनर्जागरण शब्द से तात्पर्य है कि यूनानी और रोमन सभ्यताओं का चौदहवीं शताब्दी में पुनर्जन्म हुआ।
- इसके अनुसार पुनर्जागरण, गतिशीलता और कलात्मक सृजनशीलता का काल था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- मध्यकाल को अंधकारमय काल माना गया जिसमें किसी प्रकार का विकास नहीं हुआ।
- इटली में पुनर्जागरण से जुड़े अनेक तत्व बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में पाए जा सकते हैं।
- कुछ इतिहासकारों के अनुसार नौवीं शताब्दी में फ्रांस में इसी प्रकार के साहित्यिक और कलात्मक रचनाओं के विचार पनपे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- एशिया में प्रौद्योगिकी और कार्य-कुशलता यूनानी और रोमन लोगों की तुलना में काफी विकसित थी।
- इस्लाम के विस्तार और मंगोलों की विजयों ने एशिया एवं उत्तरी अफ्रीका को यूरोप के साथ व्यापार और कार्य-कुशलता के ज्ञान को सीखने के लिए जोड़ दिया।
- यूरोपियों ने भारत, अरब, ईरान, मध्य एशिया और चीन से भी ज्ञान प्राप्त किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इस काल की एक अन्य विशेषता यह थी कि भाषा के आधार पर यूरोप के विभिन्न क्षेत्रों ने अपनी पहचान बनानी शुरू की।
- इन राज्यों के आंतरिक जुड़ाव का कारण समान भाषा का होना था।